आर्शीवाद

खिला पुष्प चमकी आखें, माँ के आचंल से झांकी ।
मन पुलक उठा एक ज्योती दीप, गृह आंगन में मेरे आया ।
नन्ही मुठियो को चूम चूम, दादी बाबा सब धन्य हुये ।
कुल का दीपक सबके मन में, नव उत्साह जगा लाया ।

नन्हा गौरव माँ बापू के, आंगन मे खेला बडा हुआ ।
चन्दा ने लोरी गायी, सूरज की किरणो ने जगा दिया ।
देश छोड परदेश बसे, यह भाग प्रभु ने जगा दिया ।
बिरवा के चिकने पात देख, आशाओ से मन चमक गया ।

शिक्षा पाकर नन्हा मेरा, अब गौरव बन कर बडा हुआ ।
नन्हे कर शक्तिवान बने, कर्तव्य राह पर पाँव बढे ।
ना जाने कब सुमधुर यौवन, अनजाने में आ जगा गया ।
स्वागत करती एक बाला ने, प्रेम पुष्प उपहार दिया ।

शंहनाई मन मे गूंज उठी, नयन मिले साथी पाया ।
फूलो कलियों से सजा हुआ, सेहरा यह महफिल ले आया ।
घर के आँगन में चरण बढे, यह प्रणय निमंत्रण सफल हुआ ।
दूल्हा दूल्हिन की छवि निहार, मन सुखी हुआ और झूम गया ।

चिर जियो युगल प्रेमी बन कर, तुम प्यार बनो सबके मन का ।
जीवन के मधुमय पथ पर, अब बढो आज गौरव - तारा ।
सुन्दर छवि जोडी की, भर लूँ इन आँखो में सुख सारा ।
अमर रहे यह मिलन प्रभु, बालक हैं यह तेरे, जैसी तेरी माया ।

12th September 1998 सुधा रस्तोगी - नानी